क्षेत्रय्या

हिन्दी अनुवाद

डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 179

क्षेत्रय्या

तेलुगु मूल

अइनमपूडि गुरुनाथ राव

हिन्दी अनुवाद

डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2015

Srinivasa Bala Bharati - 179
(Children Series)

KSHETRAIAH

Telugu Version
Ayinampudi Gurunath Rao

Hindi Translation
Dr. I.N. Chandrasekhar Reddy

T.T.D. Religious Publications Series No. 1127
©All Rights Reserved
First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होंने संस्कृति की दृढ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्ज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनियों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

गोपाल पद सायुज्य को चाहनेवाले, सुंदर पदों से मधुर भक्ति का महापट्टाभिषेक करके उनके दिव्यानुग्रह वीक्षणों में अपने जीवन माधुर्य को एक महानुभाव ने प्राप्त किया। वे कौन हैं जानते हैं? वे हैं महाकवि क्षेत्रय्या वह उनका प्रसिद्ध नाम है। असली नाम है वरदय्या। घुंघूरुधारी गोपाल पाद पद्म सन्निधि का लोकप्रिय गाँव 'मोव्वा' उनका जन्म स्थल है।

'पंद्रह सौ पदों को चालीस दिनों में लिखने' के लिए कहा गोल्कोंडा के नवाब ने। उनचालीस दिन पूरे हो गए। वरदय्या ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। एक पद भी नहीं लिखा। मोहनांगी हाहाकार कर रही है। एक ही रात में मानो घुंघूरुधारी गोपाल बनकर पंद्रह सौ पद रचकर दरबार में सभी को अश्चर्य में डालनेवाले असमान वाग्गेयकार शिरोमणि क्षेत्रय्या है।

कांची नगर में वरदराज की सन्निधि में ध्यान मग्न वरदय्या को अर्चकों ने पहचाना नहीं है। रात की सेवाएँ समाप्त हो गयीं। दरवाजा बंद करके सभी चले गये। भोर सुबह ध्यान से उठकर वरदय्या ने आँखे खोलकर देखा। अधगिरी फूल-माला की चोटी से देवी स्वामी के मंदिर से अपने मंदिर को जाते हुए क्षेत्रय्या ने देखा। उस स्तर के अनुग्रहपात्र हैं क्षेत्रय्या। मधुरानुभूति के वे बहुत बडे संपन्न हैं। वे महाकवि और महाभक्त भी हैं।

उनकी भक्ति हमें आदर्श बननी चाहिए। उनकी गोपालपद पद्म समाराधना की आसक्ति हमारे लिए मार्गदर्शक बनना चाहिए। अब पढिए।

- प्रधान संपादक

क्षेत्रय्या

दुर्लभ आशीष

वह एक गाँव है।

उस गाँव के बीचों बीच एक मंदिर है।

उस मंदिर के प्रांगण में एक दिन की रात को एक तरुण युवक भक्त अपनी आँखे बंद करके ध्यान में लीन बैठा था। मंदिर के पुजारीगण स्वामी की सेवाएँ पूरा करके दरवाजा बंद करके चले गए। उस का ध्यान भंग करना उनको अभीष्ट नहीं था।

भोर सुबह के समय ठंडी हवा के लगने से उसे होश आया। मंदिर के दरवाजे खुले थे। स्वामी अपने मोहनाकार में प्रत्यक्ष होकर सामने खडे हैं। वह मनोहर दृश्य सिर्फ एक पल ही आँखों के सामने घूम गया। लेकिन स्वामी के आर्शीवचन तो स्पष्ट रूप से सुनाई पडे। ''अरे! तुम पदकर्ता के रूप में लोकप्रिय हो जाओगे। तुम्हारे पद पीढी-दर-पीढी पूरे लोक में व्याप्त हो जायेंगे। जाओ। राजाओं के दरबार और पुण्य तीर्थों के दर्शन करो। अपने पदों से पूरे देश में चारों तरफ मेरी मधुर भक्ति और प्रेम के संदेश का प्रचार करो।''

उसने परवशता में चारों ओर देखा। मंदिर के दरवाजे बंद पडे थे। अपने पास और चारों ओर भी कोई दिखाई नहीं पड रहा था। उसने समझ लिया कि उसे भगवद्दर्शन हुआ है। तुरंत मंदिर के पास के अपने घर की ओर लांघा।

वह गाँव संस्कृति का मंदिर समझे जानेवाले कृष्ण मंडल का मोव्वा था। वह मंदिर घुंघुरुधारी गोपाल का दिव्य मंदिर था।

वह युवा भक्त आंध्र कला सरस्वती को नीराजन प्रस्तुत करनेवाले प्रसिद्ध पदकर्ता क्षेत्रय्या है। क्षेत्रय्या उनका प्रज्ञा नाम था। असली नाम मोव्वा वरदय्या था।

माँ का हृदय तडपा

घर पहुँचते ही वह अपनी माताजी के चरणों पर गिरकर कहा - ''माँ! मुझे स्वामी ने दर्शन दिए। अपने पदों से घुंघुरुधारी गोपाल की महिमा का गायन करते हुए देशविदेश घूमकर प्रचार करना है। मुझे आशीर्वाद दो।''

माँ को बहुत आश्चर्य हुआ। उसका मातृ हृदय तडपा। लेकिन बुद्धिमान वरदय्या के पिताजी ने वरदय्या की बातें सुनकर आनंद के भाष्प गिराते हुए उसके पास आकर प्रेम से आलिंगन कर लिया। उसने समझ लिया कि उसे दिव्यावेश प्राप्त हुआ है। ऐसी स्थिति में उसके मार्ग का रोडा बनना उचित नहीं समझा। माता - पिता के आशीष पाकर वरदय्या घर छोडकर यात्रा पर निकला।

वह एक आनंद की दुनिया है

तुरंत वह मोहनांगी के घर गया। मोहनांगी एक देवदासी है। मोहिनी और वरदय्या दोनों सहध्यायी हैं। दोनों मुव्वा में पलकर बडे हुए। दोनों की उम्र भी लगभग एक ही है। बचपन में रोजाना संगीत और नाट्य सीखने के लिए पासवाले गाँव कूचिपूडि कलाक्षेत्र मिलकर जाते थे। मार्ग में दोनों हंसते खेलते बडा आनंद मनाते थे। दोनों की जातियाँ अलग होने पर भी दोनों बहुत आत्मीयता के साथ रहा करते थे।

वरदय्या ने संगीत और साहित्य में अच्छा पांडित्य प्राप्त किया। बचपन से ही वह श्रृंगार रस को आलंबन बनाकर मधुर भक्ति से भरे

अच्छे पद रचकर गाया करता था। मोहनांगी एक देवदासी होने के कारण नाट्य-विद्या उसे सहज और सायास ही प्राप्त हुई। मंदिर की नर्तकी के रूप में उसे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। संगीत और साहित्य में भी एक अच्छे कलाकार के रूप में नाम बना लिया।

दोनों कलाराधक थे। दोनों सौंदर्योपासक थे। इससे बढकर दोनों घुंघरूधारी गोपाल के अनन्य भक्त हैं। फुरसत मिलने पर दोनों गोपाल के मंदिर जाया करते थे। वरदय्या अपने द्वारा रचित पदों को मधुर कंठ से आलापन करता था तो मोहनांगी उनके गीतों के भावों के अनुकूल सम्मोहन नृत्य करती थी। उस समय उसके चेहरे में दिव्य कांति दिखाई देती थी। वरदय्या उसके नाट्य पर तन्मय होता था। दोनों उस समय इस दुनिया को छोडकर अलौकिक किसी दूसरे लोक में चले गए हैं, ऐसा लगता था। वह रसात्मक कला संसार था। उस लोक में उन्हें गोपाल देव को छोडकर दूसरा कोई दिखाई नहीं पडता था।

मोहनांगी के मोह में

इस रूप में दोनों बचपन से एक साथ पले। एक साथ विद्यार्जन किया। गोपाल की सेवा भी एक साथ की। धीरे धीरे बडे हो गए। उनमें यौवन का प्रवेश हुआ। उनके बीच में प्रेम का उदय हुआ। कूचिपूडि कलाक्षेत्र में गुरुजी के पास भरतनाट्य के साथ साथ भानुदत्त की 'रसमंजरी' का गहराई से अध्ययन करके भावसार ग्रहण किया। परिणाम स्वरूप उनके मनोभाव संस्कारयुक्त होकर उदात्त प्रेम की तरफ आगे बढे।

अनजान में ही काफी समय इस रूप में बीत गया। उन्होंने भौतिक जीवन को बडी तृप्ति के साथ प्राप्त किया। वरदय्या रात के समय हमेशा मोहनांगी के घर में ही काटता था।

उससे प्रेम करना चाहिए

वरदय्या को जिस दिन घुँघरूधारी गोपाल के दर्शन हुए उस दिन वह मोहनांगी के घर नहीं गया। विरह वेदना से मोहनांगी तडप उठी। रातभर उसे नींद नहीं आयी। वरदय्या को आते हुए देखकर उसे आनंद हुआ। उसे अंदर ले गयी। रात को ठीक से नहीं सोने के कारण उसकी आँखे बंद होने लगी थीं।

''वरदा! क्या हुआ? रात को क्यों नहीं आये? मैं डर गयी थी। इस रूप में मुझे छोडकर कहीं मत जाना।'' विनीत स्वर में कहा मोहना ने।

वरदय्या ने सर झुकाकर ''मोहनम्! तुझे छोडकर ही मैं जा रहा हूँ, यह बताने ही मैं यहाँ हूँ'' कहा।

मोहना को बुरा लगा। उसे पीडा भी हुई। वरदय्या ने उसे अपने हाथों में लेकर जो कुछ भी हुआ सब बताकर ''मोहनम्! मैं अब भौतिक जीवन से अलग होने के लिए विवश हूँ। घुंघुरुधारी गोपाल ही मेरा अब सर्वस्व है। मुझे उनसे प्रेम करना चाहिए। कीर्तन गाना है। मधुर भक्ति से वेष्ठित श्रृंगार पदों से उनकी महिमा को देश के चारों तरफ प्रचार करना है'' कहा।

तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊंगी

मोहनांगी बहुत ही विवेकवाली है। वरदय्या में उस रात को आयी परिणति से उसे पुलकावली हुई। उसकी आँखों में आनंद छा गया। लेकिन एक पल में ही वह दूर हो गया। तुरंत वह निराश हो गयी।

''वरदा! तुझे छोडकर मैं कैसे रह सकती हूँ। मुझे तुम्हारे साथ ही जीना है। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। तुम जिस प्रकार का जीवन चाहते

हो मैं भी उसी प्रकार का जीवन जीऊँगी। मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊँगी। तुम्हारी सेवा करते हुए तुम्हारे साथ गोपाल जी की महिमा को मेरे नाट्य के द्वारा संसार भर में प्रचार करूंगी।''

''ठीक है, मगर अभी नहीं है। मैं कंची के वरदराज के दर्शन करना चाहता हूँ। मुझे अपने माता - पिता ने उन्हीं का नाम रखा है। कांची नगर में रहते समय मैं समाचार दूंगा। तुम वहाँ आकर मुझसे मिलो। इस बीच मुझे अपने आंदोलन में थोडा बहुत धैर्य प्राप्त हो जाएगा।'' वरदय्या ने कहा।

कभी कल्पना नहीं की

मोहना वरदय्या की बातों को ध्यान से सुना। विवश होकर हामी भर दी। वरदय्या बडी कठिनाई से रुआंसी होकर उससे बिदाई लेकर बाहर निकला। मोहना को बिजली मार गयी। वह आश्चर्य में ही रह गयी। अपने को इस रूप में अकेले छोडकर वरदय्या जाएगा, उसने कभी कल्पना तक नहीं की। उद्वेग में वह बहुत तडप उठी। उसने सोच लिया कि आगे वरदय्या उसका नहीं होगा। घुंघुरुधारी गोपाल के प्रति वह पूरी तरह समर्पित हो गया है।

गोल्कोंडा में बडा गौरव

वरदय्या पद कविता दीक्षा से निकला। उसकी पहली मंजिल गोलकोंडा है। वह सत्रहवीं सदी है। अब्दुल्ला कुतुब्षाहयाम् को नृत्य-गीतों पर तथा ललित कलाओं पर अपार मोह था। उनके दरबार में बुद्धिमान अनेक ब्राह्मण बडे बडे पदों पर विराजमान थे। उनमें से कुछ एक के साथ वरदय्या की रिश्तेदारी भी थी। इसलिए उनकी सहायता और सहयोग से वरदय्या को नवाब के साथ बात करने का मौका वैसे ही मिल गया।

गोलकोंडा नवाब की आंडबरता को देखकर वरदय्या को बडा आश्चर्य हुआ। नवाब की प्रशंसा में उसने कुछ पद बनाये। नवाब इससे खुश होकर वरदय्या का बडा सत्कार किया।

कमला के दांवपेंचों से नहीं डरा

नवाब के दरबार में कमला राज नर्तकी है वरदय्या बहुत तेज है। इससे बढकर वरदय्या भरे यौवन में बहुत सुंदर है। पहली मुलाकात में ही उसने वरदय्या से प्रेम किया। उसे अपने वश में करने के लिए अनेक योजनाएँ बनायीं। लेकिन वरदय्या उस के मोह में नहीं पडे। अब उसकी दृष्टि इससे बिलकुल अलग थी। अपने पदों से घुंघुरुधारी गोपाल की महिमा को देश में प्रचार करने के लिए उदात्त आशय से ही निकला है। अगर वह भौतिक सुख चाहता है तो मोहनांगी से बढकर और कोई सुंदर हो ही नहीं सकती। किसी भी प्रकार का दाग उसमें नहीं है। वह अपूर्व सौंदर्यवती है। अपने आशयों को उचित रूप से प्रचार करके दिव्यत्व को प्राप्त करके अंत में घुँघरुधारी गोपाल में लीन होने की अभिलाषा उसे थी। इसलिए कमला के प्रलोभन से अंशमात्र भी प्रभावित नहीं हुआ।

कुतुब्षा की देखभाल में कूचिपूडि

कुछ और दरबारों और पुण्य तीर्थों के दर्शन करने की वरदय्या की आकांक्षा थी। इसलिए उसने गोलकोंडा छोडकर जाने का निर्णय लिया। फिर अपना खूब आदर करनेवाले नवाब को छोडकर जाने को वरदय्या को मन नहीं हुआ। क्योंकि कुतुब्षा बहुत बडे सहृदयी थे। भरतनाट्य का आधार कूचिपूडि उन्हीं के दरबार से निकली थी। कूचिपूडि को भरतनाट्य कला केंद्र के रूप में बनानेवाले सिद्धेंद्र योगी की प्रार्थना पर नवाब ने वहाँ के भागवतों को कूचिपूडि को अग्रहार के रूप में देकर अपनी

कलाप्रियता में दीर्घायु डाली है। वरदय्या ने वहीं नृत्य - संगीत सीखा है। वरदय्या के पहले पहल गोलकोंडा आने के लिए यह भी एक कारण था।

लौटती यात्रा में

गोलकोंडा छोडकर जाने के लिए वरदय्या ने नवाब से अनुमति चाही। नवाब को आश्चर्य हुआ। उन्होंने आशा की थी कि वरदय्या शाश्वत रूप से गोलकोंडा में रहकर दरबार की कीर्ति बढायेगा। लेकिन वरदय्या अपनी यात्रा के बारे में बताकर लौटते समय कुछ समय के लिए गोलकोंडा में ठहरने की बात कह कर निकला। राज नर्तकी कमला निराशा में डूब गयी।

मधुरै में अच्छा आदर - सत्कार

वरदय्या की अगली मजिली मधुरै है। उस समय मधुरै का शासक तिरुमलनायक थे। वे तेलुगु भाषी हैं। विजयनगर साम्राज्य के दिनों में ही तेलुगु प्रदेश के योधाओं ने दक्षिण देश जाकर अपने राज्यों की स्थापना की है। तेलुगु को राजभाषा माननेवाले उन सभी राज्यों का दर्शन वरदय्या ने किया। उन दिनों में तेलुगु साहित्य दिन दुगुना रात चौगुना बढ रहा था। ऐसे प्रदेशों में मधुरै भी एक था।

इसलिए वरदय्या को हार्दिक स्वागत प्राप्त हुआ। तिरुमलनायक रसज्ञ थे। बडे संस्कारवाले राजा थे। गोलकोंडा दरबार की तरह मधुरै दरबार विलासी नहीं था। आध्यात्मिक चिंतन और नियम-निष्ठा आदि के लिए कट्टर प्रदेश माना जाता था। वरदय्या ने तिरुमल नायक की प्रशंसा में कुछ पद बनाये।

दिव्य प्रेम का श्रृंगार से सौंदर्य किया

उन दिनों में दरबारों में श्रृंगार काव्यों को ही प्राधान्यता दी जाती थी। श्रृंगार रस को जितना महत्व दिया जाता, जितना प्रचलन वह रस

था उतना और किसी रस को प्राप्त न था। इसलिए वरदय्या ने सब के आस्वाद योग्य श्रृंगार को ही आधार बनाकर पद रचना की है। नृत्य, साहित्य और संगीत की त्रिवेणी संगम होने के कारण वरदय्या के पद लोक प्रचलित हुए। उन पदों की वस्तु विश्वजनीन विशुद्ध उदात्त प्रेम है। कवि ने उस प्रेम पर भक्ति से भरे मधुर श्रृंगार की घूंघट डाली है। भक्त और पंडित उनके पदों के अंतर्निहित दिव्य प्रेम से उत्तेजित होते थे। सामान्य तो पदों के सरस श्रृंगार से तथा मधुराति मधुर तेलुगु भाषा से मुग्ध होते थे। वरदय्या के पदों में यही वैभव प्राप्त होता है।

कैसे यह काम कर पा रहा है

वरदय्या के विशाल भावों ने शीघ्र ही तिरुमलनायक के हृदय को जीत लिया। उसने समझ लिया कि वरदय्या प्रज्ञावान हैं। दरबारी कवियों को भी वरदय्या पर आस्था बढी। इस स्तर के सहज सुकुमार भाषा शैली में श्रृंगार रस को आलंबन बनाकर परतत्व को लेकर पद रचना वह कैसे कर रहा है, यह सोचकर सभी आश्चर्य होते थे।

वह मंदिर अद्भुत सृष्टि है

मधुरै में वरदय्या ज्यादा दिन नहीं था। बहुत कम दिनों में ही तिरुमलनायक के दरबार में अच्छी नाम - प्रतिष्ठा उसने प्राप्त की है। उसने तिरुमलनायक पर कुछ पद भी बनाये। मधुरै का मीनाक्षी मंदिर एक अद्भुत सृष्टि है। वह एक अपूर्व कला खंड है। सिर्फ मानव मात्र के द्वारा निर्मित भवन के रूप में वह नहीं लगता है। कला के तप में निष्णात दिव्यांशसंभूतों के द्वारा सृजित भव्य भवन के रूप में वह दिखाई पडता है। उस भवन का निर्माण वैभव ऐसा ही है। जब तक वरदय्या वहाँ था रोजाना वह मंदिर का दर्शन करता था। देवी की आराधना किया करता था।

शिव कंचि और विष्णु कंचि

मधुरै से वरदय्या कांचीनगर गया। कंची बहुत ही प्राचीन तीर्थ था। सांप्रदायिक सद्भाव के लिए वह विख्यात था। शैव और वैष्णव धर्मों के साथ-साथ जैन तथा बौद्ध धर्मों को भी कंची नगर ने आश्रय दिया था। वहाँ गगनचुंभी मंदिर थे। कांची नगर शिव कंची और विष्णु कंची के रूप में दो भागों में विभाजित है।

शिव कंची में एकाम्रेश्वर का मंदिर, कामाक्षी देवी मंदिर अद्भुत रूप से दिखाई पडते हैं। एकाम्रेश्वरालय में युग युगों का पुराना एक आम का पेड है। कामाक्षी देवी उस पेड के नीचे बैठकर शिव का तप किया था। ऐसा पुराणों में उल्लिखित है। उस पेड की चारों शाखाओं में चार अलग अलग स्वाद के आम लगते हैं। यह उस वृक्ष का वैशिष्ट्य है। यह भी माना जाता है कि उस पेड की चार शाखाएँ चार वेदों के समान हैं।

विष्णु कंची में वरदराज स्वामी का मंदिर काफी गंभीर और अद्भुत दिखाई पडता है। उस मंदिर से संबंधित सात मंजिल वाले शिखर दर्शन करके वरदय्या का हृदय स्पंदित हो गया। वरदराज स्वामी पहली मंजिल पर विराजमान थे। उनकी देवी लक्ष्मीदेवी का मंदिर उससे कुछ दूरी पर है।

मेरा जीवन धन्य हो गया

वरदय्या ने वरदराज स्वामी के दर्शन करते ही परवश होकर उनकी प्रशंसा में पद रचकर गाया है। एक पल के लिए समझा कि अपना जीवन धन्य हो गया है। अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करने वाले कंचि वरदराज स्वामी के दर्शन करने का अवसर मिलने से वरदय्या को अमित आनंद हुआ। घुँघुरुधारी गोपाल के बाद वरदराज स्वामी ने ही उनकी

दृष्टि को आकर्षित किया। वे उनका प्रिय देव है। वह उन की प्रेयसी है। उस मधुर भावना में अपने को भूल कर वह परवश होता था।

कंची में वरदराज स्वामी पर वरदय्या की भक्ति पराकाष्ठा तक बढ गयी। वह घंटों भर मंदिर में किसी कंभे के साथ पीठ सटाकर ध्यान मग्न होकर चलनरहित हो जाता था।

स्मरणीय मधुरानुभूति

एक रात को स्वामी जी की सेवाएँ पूरा होने के बाद अर्चक स्वामी मंदिर के सभी दरवाजे बंद करके चला गया। वरदय्या वहीं निर्मल ध्यान में बैठा था। अर्चक ने उसे नहीं देखा। भोर सुबह वरदय्या होश में आया। आँखें खोलकर देखा। स्वामी के शयनागार को छोडकर अपने मंदिर की तरफ चलनेवाली देवी को देखा। इस अपूर्व दृश्य ने उसे उत्तेजित किया। केवडे के फूलों से बनी उनकी चोटी खुल गयी थी। गले की हार उलझ गयी थी। विशाल नेत्रों में नींद दिखाई देती थी। उनका चलना लडखडा रहा था। दोनों ओर दो दासियों की सहायता से वे धीरे धीरे कदम बढा रही थी।

इस अपूर्व दृश्य ने उसके निर्मल हृदय पर अमिट छाप छोडी है। वास्तविकता की दृष्टि से इस अपूर्व दृश्य को अक्षर रूप दिए बिना रह नहीं सका। शीघ्र ही उसके कंठ से एक मधुराति मधुर पद बाहर निकला।

मगुव तन केलिका मंदिरमु वेडलेन
वगकाड, मा कंचिवरद तेल्लवारे ननुचु ॥मगुवा॥

विडजारु गोज्ञंगि विरिदंड जडतोनु
कडु चिक्कुपडि पेनगु कंटसतितोनु

निड्डुद कन्नुल देरु निदुर मब्बुतोनु
तोडरि पदयुगमुन तडबड्डु नडतोनु - ॥मगुवा॥

सोगसि सोगयनि वलपुचूपुलतोनु
... ...

इरुगडलकैदंडलिच्चु तरुणलतोनु
परमात्मा मुव्व गोपाल तेल्लवारे ननुचु ॥मगुवा॥

(अर्थात् सुबह होते जानकर प्रेयसी अपना मंदिर लौट रही है, हे प्रिय कंची वरद! चोटी में लगी केवडे की माला टूट गयी है, गले की हार उलझ गयी है, नेत्रों में मानो नींद उमड रही है, इससे उसके पैर लडखडा रहे हैं, सुंदर प्रेयसी तीक्षण वीक्षण के साथ लौट रही है। दोनों तरफ दासियों के रहते प्रेयसी लौट रही है यह जानती हुई कि सुबह हो गया है, हे परमात्मा घुँघुरुधारी गोपाला)

यह वरदय्या के जीवन में अविस्मरणीय मनोहर दृश्य रहा है।

तंजावूर की यात्रा

अगले दिन वरदय्या को मंदिर में देखकर अर्चक विस्मित हो गए। उसे एक कारण जन्मी के रूप में देखा। भगवान से सीधा दिव्य संबंध बनानेवाले महापुरुष के रूप में उसे देखा। वरदय्या कंची में सिर्फ एक महीने के लिए ही रहा। उसके कंची में रहते ही तंजावूर के अधिपति विजय राघवनायक का निमंत्रण मिला। वह तुरंत तंजावूर नगर गया।

भ्रमरों को कमलों के द्वारा बुलाना है क्या?

मधुरै जाने के पहले ही वरदय्या ने तंजावूर राजाधिपति रघुनाथ नायक के दर्शन किए। पता नहीं क्यों उस राजा ने वरदय्या का सत्कार

नहीं किया, इससे बढकर यह सवाल किया कि 'क्यों आये हो।' इससे वरदय्या को अवश्य गुस्सा आना चाहिए था। लेकिन ऐसा न करके इस रूप में जवाब दिया था -

तमुदा मेवत्तु रर्थुलु
क्रममेरिगिन दातकडकु, रम्मान्नारा
कमलंबुलुन्न चोटिकि
भ्रमरंबुल नच्युतेंद्र रघुनाथानृपा!

(अर्थात् धन चाहनेवाला दाता के पास अपने आप जाएगा, जहाँ कमल हैं वहाँ भ्रमर बिना बुलाए चले जाते हैं, हे रघुनाथ नृप।)

वरदय्या वहाँ नहीं रहे। तुरंत वहाँ से निकले। लेकिन उसके पद वैभव, मधुर भक्ति के बारे में सुनकर रसज्ञ विजयराघव नायक के द्वारा दुबारा बुलाने पर वह तंजावूर आया है।

ललित कलाओं का पट्टाभिषेक

विजय नगर साम्राज्य के दिनों में कई तेलुगु योधा दक्षिण देश में उपनिवास बनाकर अपने राज्यों की स्थापना करके शासन चलाया है। नायक राजा लोग भी उसी प्रकार के हैं। उनमें रघुनाथ विजयराघव रसज्ञ हैं। महा विद्वान भी हैं। कलापोषक भी हैं। रघुनाथ नायक के दरबार में साक्षात सरस्वती ही रहा करती थी। ललित कलाओं को जितना आदर उस दरबार में प्राप्त हुआ उतना किसी भी युग में किसी भी दरबार में प्राप्त नहीं हुआ।

कृष्णदेवराय के साम्राज्य के पतन के बाद आदर प्राप्त न होने से कवि, पंडित और कलाकार दक्षिण देश में जाकर बसे। कूचिपूडि

भागवतों को रघुनाथ नायक ने 'अच्युतपुरमु' नामक अग्रहार दिया। उसी को 'मेलट्टुरु' नाम से पुकारते हैं। उनमें से कुछ लोग वहीं बस गए।

सरस्वती भवन

रघुनाथ नायक महाकवि थे। अच्छे प्रबंध और नाटक लिखे हैं। एक प्रकार से तेलुगु नाटक का श्री गणेश उन्होंने ही किया है। उन्होंने राज महल में एक नाट्यशाला बनायी है। उन्होंने अपने जीवन काल में अपने सर्वस्व को कलाराधना के लिए ही खर्च किया। साथ ही तंजावूर को एक कलातीर्थ के रूप में बनाया। उस कला तपस्वी के तपःफल के रूप में ही वहाँ सरस्वती भवन का निर्माण किया गया है।

लक्ष्मी भवन

यह एक अपूर्व विज्ञान मंदिर है। आश्चर्य की बात नहीं है कि वहाँ पूरा विश्व साहित्य संग्रहीत किया गया है। उस राजा के जमाने में सभी कलाओं में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी समान अधिकार और अवसर पाती थीं। विशेष रूप से स्त्रियों के साहित्यिक कार्यक्रमों के लिए बनाया गया लक्ष्मी भवन ही इसका साक्ष्य प्रमाण है।

रघुनाथ का रम्य स्थान

रघुनाथ नायक के दरबार में मधुरवाणी, रामभद्रांबा, कृष्णाजी, रंगाजम्मा आदि प्रसिद्ध लेखिकाएं रहती थीं। रघुनाथ नायक ने मधुरवाणी का कनकाभिषेक किया है। उन्होंने सुंदरकांड तक रामायण को संस्कृत भाषा में लिखा है। वे आधे पहर में सौ श्लोक रचने की प्रतिभा रखनेवाली लेखिका है। आशु के रूप में छः भाषाओं में कविता करने की प्रतिभा भी उनमें थी। रघुनाथ नायक की प्रशंसा पानेवाली एक और

लेखिका रामभद्रांबा है। उन्होंने बारह सर्गों में 'रघुनाथ नायकाभ्युदय' नामक संस्कृत काव्य रचा है। कृष्णाजी नामक कवइत्री मांगे गए वृत्त में दी गयी समस्या की पूर्ति करते हुए श्लोक बता कर उसका अनुवाद करती थी। रंगाजम्मा भी एक महाकवइत्री थी। पता नहीं क्यों रघुनाथ नायक के काल में वे ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो पायी।

पिता से बढकर पुत्र

रघुनाथ नायक के बाद गद्दी संभालनेवाले विजय राघव ने साहिती रंग में पिता से बढकर पुत्र के रूप में नाम प्राप्त किया है। कई कवियों एवं कवइत्रियों को आश्रय देकर निरंतर उनसे संगीत, साहित्य, नाट्य और विद्या विनोद से वे समय काटते थे। वास्तविकता यह है कि उनके द्वारा की गयी सेवा और किसी राजा ने नहीं की है। उसके काल में दूसरे लोगों के द्वारा रची गयी रचनाओं से बढकर उनके स्वयं के द्वारा रची गयी रचनाएँ ही अधिक हैं। यक्षगान, प्रबंध काव्य और काव्य लगभग चालीस तक उन्होंने लिखे हैं, ऐसा प्रचलन है।

विजयराघव का विजयास्थान

विजय राघव के दरबार में कालय्या, शतकृतु आदि महापंडित और कविगण हुआ करते थे। दरबारी कवि कामरस वेंकटपति सोमयाजी असमान पांडित्य रखनेवाला विद्वान है। उन्होंने 'विजयराघव चंद्रिका विलास' नामक नाटक लिखा है। वे बहुत बडे वाग्गेयकार हैं। उस समय लेखिकाओं में रंगाजम्मा बहुत लोकप्रिय हुई है। वे बडी पंडिताइन और नर्तकी भी हैं। विजय राघव की भोगपत्नी भी है। विजय राघव श्रृंगार पुरुष होने पर भी महाभक्त भी हैं। उन्हें 'मन्नारु दास' नामक दूसरा नाम भी है। विजय राघव की श्रृंगार क्रीडाओं का चित्रण करती हुई रंगाजम्मा ने 'मन्नारुदासु विलास' नामक एक प्रबंध काव्य भी लिखा है। विजयराघव के आदेश पर उन्होंने तेलुगु में 'उषा परिणय कथा' नामक काव्य भी लिखा।

इसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाना है

रंगाजम्मा ने वरदय्या जैसे वाग्गेयकार को नहीं देखा। इसलिए उन पर उसे बहुत बडा अभिमान जागा। उनके पदों को बहुत बडे आदर के साथ अभिनय करती थी। लेकिन दरबार में नये आये एक पदकर्ता को दरबार में इतनी प्रतिष्ठा मिलना कई कवियों को खटकने लगा। इसलिए विजय राघव के मन में उसे लेकर अनादर भाव जगाने की कोशिशें की गयीं। उसमें दोषों की खोज होने लगी।

वरदय्या पर लगाया गया आरोप

वरदय्या अपने पदों में विजय राघव को 'तुम' या 'अरे' कहकर संबोधित करता था। उसे राजा की दृष्टि में लाकर वरदय्या के प्रति द्वेष जगाने की कोशिश की गयी है। वरदय्या के द्वारा प्रयुक्त व्यावहारिक तेलुगु भाषा उन्हें अच्छी नहीं लगती थी। कविता उदात्त एवं गंभीर होना चाहिए, ऐसा उनका विचार था। इससे बढकर उसके पद असभ्य श्रृंगार से भरे रहते हैं, जनता में समुन्नत भावों को जगाने में वे समर्थ हैं, ऐसा उनका विचार है।

एक दिन विजय राघव जब हर्षोल्लास में थे, दरबारी कवियों ने बातों-बातों में वरदय्या के खिलाफ सुनाया। राजा को संबोधित करते समय, उसके पदों की व्यावहारिक शैली आदि के संदर्भ में अपनी असहमति को उन्होंने प्रकट किया। वरदय्या ने उन्हें ऐसा जवाब दिया।

समुचित समाधान

''प्रभु पर मुझे गौरव से बढकर प्रेमभाव है। मनुष्य के रूप में वे मेरे लिए प्रेमपात्र ही हैं। राजा के रूप में गौरव के अधिकारी हैं। मेरे पदों में संबोधन करते समय उन्हें मैं मानव के रूप में देखता हूँ। अपने ईश्वर को भी मैं उसी रूप में संबोधन करता हूँ। ईश्वर को तथा राजा का संबोधित करने का मेरा तरीका उनके प्रति मेरा निर्मल प्रेम का सूचक है। इससे बढकर मेरी भाषा - शैली के बारे में बोलना है तो - - वह पदकविता है। सिर्फ बुद्धिजीवियों के लिए लिखी गयी पद्यकविता में व्यावहारिक भाषा शैली एक विशिष्ट शैली के रूप में रहना है। लेकिन नृत्य गीतों के लिए अनुकूल पदकविता शैली सबको अनुकूल होनी चाहिए। वह व्यावहारिक भाषा के काफी नजदीक होनी चाहिए। इतने मात्र से पदों को साहित्य में स्थान नहीं मिलेगा, ऐसा नहीं सोचना। जरूर उसे एक वैशिष्ट्य प्राप्त होगा। कृति आलंकरिक न होकर सहज सुंदर के रूप में होना वरदय्या पसंद करता है। वही मेरा आशय भी है। अब मेरे पदों में मौजूद श्रृंगार के बारे में बोलना है तो श्रृंगार मेरे लिए आलंबन है। लेकिन मेरे सभी पद मधुर भक्ति प्रेरित हैं। भौतिक कामनाओं को दिव्य का जामा पहनाना ही मेरा लक्ष्य है।

इस पद की पूर्ति करो

वरदय्या के जवाब ने राजा में बहुत चित्तोल्लास जगाया। दरबारी कवियों को वरदय्या का जवाब अच्छा नहीं लगने पर भी अपने आक्षेपों के समर्थन में कुछ और तर्क देने में असमर्थ वे और कोई व्याख्या न करके मौन रह गये। उसके उपरांत वरदय्या एक पद को अधूरा बनाकर उसे पूरा करने की बात कहकर अपने आप सेतु यात्रा के लिए निकल पडा।

मोहनांगी कंची पहुँच गयी

अपने वचनों के अनुसार वरदय्या कांची नगर में रहते समय मोहनांगी को खबर भेजी। वरदय्या पर प्राण टिकाकर रहनेवाली मोहनांगी उस शुभ घडी के लिए ही राह देख रही है। समाचार पाते ही वह परवशता में डूब गयी। अपने जन्म को धन्य समझने लगी। वह छोटे भाई को साथ लेकर कंची पहुँच गयी। वरदय्या को देखने की इच्छा से सीधे वरदराज स्वामी के मंदिर गयी।

लेकिन उनके कंची पहुंचने से पहले ही वरदय्या कंची छोडकर तंजावूर गया है, ऐसा समाचार सुनकर, वह बहुत चिंतित हो गयी। मंदिर के आचार्यो ने उसे बहुत दाढस दिलाया। वरदय्या फिर लौटकर वरदराज स्वामी के दर्शन के लिए आयेगा, उस समय तक स्वामी की सेवा करते हुए वहीं रहने के लिए उन्होंने सारी सुविधाओं का प्रबंधन किया।

पदों को अभिनय से जीवंत बनाया

मोहनांगी अपने दिल पर पत्थर रखकर एक एक पल एक युग के रूप में काटते हुए वरदय्या की राह देखती वहीं रह गयी। मंदिर के अधिकारियों के द्वारा बहुत मिन्नत करने के उपरांत एक दिन उसने वरदय्या के एक एक पद का अभिनय किया। उसके अभिनय में मधुर भक्ति छलक गयी। इस के पहले कंची में सभी ने वरदय्या के द्वारा पदों को गाते सुना था। लेकिन आज मोहनांगी उन पदों को अभिनय करती हुई रूप दिया तो सभी उसमें तन्मय हो उठे। उसके हाव भाव, कर, चरण विन्यास आदि उन्हें अपूर्व लगे। उनको दिव्यानंद दिया। अपने अभिनय के द्वारा उसने जिन आध्यात्मिक भावों को जगाया, उसे देखकर पंडितगण मुग्ध हो गये। सब ने मुक्त कंठ से उस की प्रशंसा की है।

वरदय्या पर जो प्रेम - आदर उनमें था, उसे अप्रत्यक्ष रूप से मोहनांगी पर दिखाना उन्होंने शुरु किया।

एक रात को भोर सुबह देवी के स्वामी के शयन मंदिर से आते हुए देखकर आवेश में देवी का वर्णन करते हुए वरदय्या ने एक रोमांचकारी पद लिखा है, उस पद को गाते हुए सुनकर सभी परवश में पड गये थे, यह सुनकर मोहनांगी स्वयं तन्मय हो उठी।

कहां रहना है?

वरदय्या अब सिर्फ घुँघुरुधारी गोपाल का वरद ही नहीं है बल्कि पूरे संसार के वरद के रूप में परिणत हुआ है। कंची ने उसे अपना लिया है। उसकी राह देखती देखती मोहना की आँखों में छाले पड गयी। उसके बारे में कुछ पता नहीं चला। उसके प्राण उसी पर टिके रहे। उस का विरह उसके लिए असह्य लगने लगा। कंची मंदिर के आचार्यों के बहुत बार समझाने पर भी वह अपने छोटे भाई को साथ लेकर तंजावूर के लिए निकल पडी।

लेकिन उसके साथ उस का दुर्भाग्य भी साथ चला। उनके तंजावूर पहुंचने के कुछ ही दिन पहले वरदय्या तंजावूर छोडकर रामेश्वरम के लिए निकल गये हैं, ऐसा उसने सुना है। उसपर बिजली गिर गयी। वह तडप उठी। वह एक महानगर है। कहाँ रहना है और क्या करना है, उसे कुछ भी मालूम नहीं। निराशा भरी उस के लिए सिर्फ वरदय्या के दर्शन ही आशा की किरण हैं। कंची में तथा तंजावूर में वरदय्या से मिल नहीं पायी, इससे उसे बहुत दुख हुआ। कंची में सहृदय आचार्यों के आदर सत्कार और सहयोग से अपने स्वस्थल में रहने का सुख मिला था।

सावधानी से रहना है

राजा के दरबार के दर्शन करने उसे मन नहीं हुआ। दरबारी वातावरण उसके लिए नया है। वहाँ की कृत्रिमता और आडंबरता देखकर उसे बुरा लगता था। धीरे पता लगाने के बाद पता चला कि पंडिताइन और प्रसिद्ध नर्तकी रंगाजम्मा को वरदय्या पर अभिमान था। मोहनांगी ने सोचा कि मिलने के लिए वही सही व्यक्ति है। दरबारी कवि और वरदय्या के बीच में हुए विवाद के बारे में भी उसने सुना। इसलिए उसने निर्णय किया कि बहुत सावधानी से काम लेना चाहिए।

एक दिन संध्या के समय वह रंगाजम्मा से मिलने गयी। पहली बार वह किसी दरबारी स्त्री को देख रही थी। वह उसके लिए नया अनुभव था। रंगाजम्मा चुस्त और गंभीर थी। उनके चेहरे पर उदात्त और करुणा स्पष्ट झलक रही थी। उसे देखते ही मोहनांगी के मन में उसे लेकर अच्छे विचार जागे। मोहनांगी का सहज सौंदर्य और सरल स्वभाव रंगाजम्मा के लिए अच्छे लगे। एक पल के लिए दोनों ने एक दूसरे की तरफ अपलक देखा।

प्रेम के लिए विरह ही कसौटी है

मोहनांगी ने रंगाजम्मा को अपनी दीन गाथा पूरी तरह सुनायी। उसे सांत्वना देते हुए रंगाजम्मा ने कहा - ''तुम्हारी दुस्थिति देखकर मुझे दया आ रही है। समकालीनों में वरदय्या जैसे कवि और गायक नहीं हैं। उस के पद सकल जनों से प्रशंसित हैं। इतने बडे कवि-गायक तुम्हारा प्रेमी होना तुम्हारा भाग्य है। इस विरह के लिए तुम दुखी मत हो, स्वच्छ प्रेम के लिए विरह ही कसौटी है। वरदय्या पर तुम्हारा प्रेम परीक्षा में खडा है।

वह यहाँ अवश्य आयेगा। दरबारी कवियों को एक पद दो अधूरे चरण पूर्ति के लिए देकर गए। उसके यहाँ पहुँचने के पहले उस पद की पूर्ति इनको करना है। नहीं तो अपनी हार स्वीकार करनी है। तुम मेरे आश्रय में रहकर दरबारी सभी विनोद देखते रहना। क्योंकि वे सब तुम्हारे लिए नये हैं। इससे तुम को अनुभव प्राप्त होगा।''

रंगाजम्मा के सहृदय से मोहनांगी को बहुत संतोष हुआ। रंगाजम्मा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। वह अपने भाई समेत वहीं सुखी रही।

श्री रंग का वैभव

तंजावूर से निकलने के बाद वरदय्या श्रीरंगम गया। उस मंदिर के वैभव को देखकर वरदय्या को आश्चर्य हुआ। वह सप्त प्राकारों के बीच में एक नगर जैसा था। वहाँ हजार खंभेवाला मंडप, सोने के पानी चढा मंदिर का ऊपरी तल्ला, एक सौ से भी अधिक शिखरों के दर्शन करके वरदय्या को अमित आनंद हुआ। पंडितों के द्वारा निरंतर वेद-पठन किया जा रहा था। उस दृश्य को देखकर वरदय्या को पुलकावली हुई। मंदिर का वातावरण पूरा पवित्रता से भरा था। अत्यंत विशाल, असाधारण शिल्पकला से नेत्रपर्व करनेवाला मंदिर प्रांगण साक्षात् कलियुग वैकुंठ जैसा लग रहा था।

वरदय्या ने मंदिर में प्रवेश करके शेषसाई मुद्रा में लेटे श्री रंगनाथ के दर्शन किए। उस मनोहर दृश्य ने वरदय्या को दिव्यानंद में डुबो दिया। एक पल के लिए वह उस भौतिक संसार को भूल गया। उस स्थल वैभव तथा मंदिर के सौंदर्य ने उसे अभिभूत किया। वह कुछ दिनों तक श्रीरंगम में स्वामी की सेवा करता रहा। स्वामी पर कुछ पद भी बनाये।

रामेश्वर की रमणीयता

इसके उपरांत वरदय्या रामेश्वरम गया। उस महाक्षेत्र का दर्शन करने की अभिलाषा कई वर्षों से थी। उत्तर में वाराणासी, दक्षिण में रामेश्वरम संसार भर में प्रसिद्ध महाक्षेत्र हैं। वहाँ के शिवलिंग की प्रतिष्ठा स्वयं राम ने की, ऐसी मान्यता है। वरदय्या सेतु स्नान करके मंदिर में गया।

शिवलिंग अद्भुत था। चित्रकला से मंदिर भरा पडा था। अनगिनत खंभों से अपूर्व लगनेवाले मंदिरांतर गलियों ने उसे परवश किया। इतने बडे महाक्षेत्र का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करके उसने महानंद अनुभव किया।

मोव्वा मन कौंध गया

उस के मोव्वा छोडकर काफी समय हो गया। उसका ध्यान फिर से घुँघुरुधारी गोपाल पर गया। लौटकर फिर से अपने स्वामीजी के दर्शन करने की बलवती इच्छा उसे हुई। आवेश में तुरंत कुछ पद रचे। उसने रामेश्वरम में एक महीना काटा। तंजावूर छोडकर लगभग छः महीन हो गए थे। दरबारी कवियों ने दिए गए अधूरे पद की पूर्ति की या नहीं? एक बार मन में सोचा। आखिर रामेश्वरम से तंजावूर जाकर वहाँ से बाकी क्षेत्रों के दर्शन करते हुए गोलकोंडा से होते हुए मोव्व जाने का निर्णय कर लिया।

मोहनांगी की तडप

मोहनांगी छः महीनों से तंजावूर में है। रंगाजम्मा के आश्रय में उसे समय काटने से नहीं कट रहा था। फिर भी उसका हृदय हर पल वरदय्या

के लिए तडप रहा था। घुँघुरुधारी गोपाल से प्रार्थना करते हुए बार बार अनुग्रह की याचना कर रही थी। सुंदर निर्मल लोक जन जीवन से वह दूर हो गयी है। उसका मन हमेशा उसी जीवन पर टिका था। वरदय्या के साथ लौटकर मोव्वा पहुँचकर आनंद से घुँघुरुधारी गोपाल की सेवा करते हुए प्रशांत जीवन जीने की उसकी बडी आकांक्षा थी। वरदय्या की राह देखती हुई दिल थाम कर प्रत्येक पल एक युग के रूप में वह काट रही थी।

श्रृंग भंग से बच नहीं सकते

एक दिन शाम को रंगाजम्मा ने मोहनांगी से कहा - ''इन दिनों में रामेश्वरम से कुछ यात्री लोग आये। उन्होंने बताया कि वरदय्या एक सप्ताह में आयेगा। इसलिए तुम चिंता छोडकर उल्लास के साथ रहो। मेरे साथ दरबार में आकर वरदय्या के पदों का अभिनय करो। वरदय्या के द्वारा दिए गए अधूरे पद की पूर्ति के लिए दरबारी कवियों ने अपनी प्रतिभा लगाकर प्रयास किया। लेकिन वे सफल नहीं हो पाये। कैसे पूरा करना है समझ नहीं पाये। उनके लिए सब कुछ अस्तव्यस्त लगा है। उन्हें श्रृंगार नायिकाओं के मनोभावों के बारे में कुछ भी पता नहीं है। उन्होंने मेरी सहायता मांगी है।

वरदय्या ने अलंकार शास्त्र का अध्ययन करके उसे आमूल पचा लिया है। बहुत लोकानुभव रखनेवाला है। उसके द्वारा अपने पदों में वर्णित नायिकाएँ काल्पनिक न होकर अनुराग से भरे वास्तविक नायिकाओं के रूप में गोचर होती हैं। उन नायिकाओं के मनोभावों को जानने के लिए सिर्फ शास्त्र ज्ञान पर्याप्त नहीं है। इसलिए मैं उनकी सहायता नहीं कर पायी। वरदय्या पर द्वेष से अनावश्यक झगडा मोल लिया है। सभी

अब उस पद को कैसा पूरा करना है, नहीं जानते हुए आपस में लड रहे हैं। उन्हें वरदय्या के हाथों में श्रृंग भंग आवश्य होगा।''

मोहनांगी का मुग्ध मोहनाभिनय

रंगाजम्मा की बातों से मोहनांगी को महादानंद हुआ। उसके साथ दरबार जाकर वरदय्या के पदों का अभिनय करने के लिए वह राजी हो गयी। रंगाजम्मा को भी संतोष हुआ। उसने मोहनांगी को नर्तकोचित वस्त्राभरणों से सजाया। मोहनांगी सहज ही सुंदर थी। थोडे बहुत श्रृंगार से वह अप्सरा जैसी चमकने लगी। दोनों दरबार गयीं। उस दिन मोहनांगी पदों का अभिनय करेगी, यह सुनकर विजय राघव को आनंद हुआ था। विजय राघव ने रंगाजम्मा से मोहनांगी की कहानी सुन रखी थी। वरदय्या के पदों को रंगस्थल में अभिनीत होते देखने का कुतूहल उनमें था।

मोहनांगी ने नाचना शुरु किया था। तीन वर्षों से अभिनय से दूर रहने के कारण उसकी आदत चूक गयी है। इससे बढकर सभा में बडे बडे पंडितों, कविगण और व्यापारियों के समक्ष नाचने के लिए वह थोडा डर गयी। एक कदम पीछे हट गयी। लेकिन फिर से धैर्य इकट्ठा करके असाधारण रीति में अतिमनोहर ढंग से अभिनय करना शुरु किया। वह वरदय्या के पदाभिनय में लीन हो गयी। उसकी आँखों के सामने दिव्यानंद नाचने लगा था। पदाभिनय के लिए सभी रूपों में अनुकूल उसके कर, चरणों का हिलना, पदों के दिव्य भावनाओं को याद दिलानेवाले हाव भाव, नेत्रों को हिलाना आदि ने उसके नाट्य को एक वैशिष्ट्य प्रदान किया। नेत्रपर्व करनेवाला मोहनांगी के नृत्य को विजय राघव बडे आनंद से देखने लगे थे। दर्शक सभी होश खोकर कहीं दूसरी दुनिया में पहुँच गए थे।

अस्मरणीय मधुर क्षण

तभी सभा में कल कल मच गया। वरदय्या दरबार में प्रवेश कर रहा था। विजय राघव ने वरदय्या को देखकर फूला न समाया। वरदय्या मोहनांगी को नाचते हुए देखकर रोमांचित हो गया। मोहनांगी वरदय्या को आश्चर्य के साथ देखने लगी। उसकी आंखों में कई दिनों से निक्षिप्त आतुर भावना उभरकर आयी। लेकिन हर्षावेश में मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसकी आँखों से धारा प्रवाह आनंद भाष्प गिरने लगे। आवेश से वह रोमांचित हो गयी। अपने अनुराग को जतलाते हुए वरदय्या ने उसके हाथ को हलके से स्पर्श किया। वह दोनों के लिए एक अस्मरणीय मधुर क्षण था।

पद की पूर्ति वरदय्या को ही करना है

इस के उपरांत वरदय्या को अपने अधूरे पद की पूर्ति के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। राजा ने अपने दरबारी कवियों की तरफ देखा। वे भयभीत हो गए। गडबड में पड गए। किसी ने कुछ नहीं कहा। दरबारी कवि सोमयाजी ने खडे होकर कहा - ''वरदय्या के द्वारा उस पद में वर्णित नायिका किस श्रेण की है, उसके मनोभाव कैसे होते हैं, जानने के लिए हमने शक्ति भर कोशिशें की है, लेकिन हमें सफलता नहीं मिली। स्त्री का हृदय स्त्री ही जानती है, यह सोचते हुए हम ने विदूषी रंगाजम्मा से भी संपर्क किया। लेकिन उसका भी अनुभव है कि अलौकिक प्रतिभा रखनेवाले वरदय्या के मनोभावों को समझना इतना सुलभ नहीं है। इसलिए उस पद की पूर्ति स्वयं वरदय्या ही करे, ऐसी हमारी प्रार्थना है।''

वरदय्या के द्वारा दिया गया पद

वरदय्या के द्वारा पूरने के लिए दरबारी कवियों को दिया गया अधूरा पद निम्न है -

पल्लवी : वदरक पोपोवे - वाडेल वच्चीनि - वद्धु रावद्दनवे

अनुपल्लवी : अदियोक युगमु वेरे जन्म मिपुडु
अतडोवरो ने नेवरो ओ चेलियरो ।।वदरक।।

निच्च निच्चलु नेडेवच्चीनि - रेपैन वच्चेननुचु मदिलो
निच्चगा बलु वेडिद्दिर्पुलचेत निंतरो पेदवुलेंडि
हेच्चैन वेन्नैल रात्रुलु येन्नैन्नो गडिपिति निक नेटिमाटले
।।वदरक।।

वलपु काड्डिदे कादा वच्चुननुचु तेरुपुलुजूचि वेसारिति
नेललेंचि यलसिति - निलुपरानि प्रेम नेम्मदि तडुचु कोंटि
कलकंठ पिकनादमुलु मिंचु मधुमासमुलु गडपि तीवट्टि मुचटलिकनेले
।।वदरक।।

भामरो! शकुनमु लडिगिति मुव्वगोपालुडु वच्चु ननुचु
कामिंचि नाधुल गलयु चेलुलजूचि करगि चिंतनोंदिति

... ...

... ...

अंतिम दो पंक्तियों की पूर्ति करना बाकी रह गया है। इस पद में वर्णित नायिका स्वीया है। पति काफी समय से न आने से वह विरह में तडपती हुई उक्ता गयी है। कई शकुनों के बारे में पूछा। अपने प्रियों के साथ केलिकलापों में मग्न दूसरी स्त्रियों को देखा। लेकिन पता नहीं क्यों हृदय के पिघलने से उसने चिंता व्यक्त की है। उसके बाद क्या हुआ होगा? उसने क्या कहा होगा? अंतिम दो पंक्तियाँ उस भाव को स्पष्ट करनेवाली होनी चाहिए? उसकी पूर्ति उसी रूप में करनी हैं।

शायद अवमानना का शिकार होना पडेगा

साधारणतया किसी को भी उस समय गुस्सा आ सकता है। प्रिय पर अनियंत्रित कामोद्रेक भी जाग सकता है। नहीं तो निस्सहाय स्थिति में कुछ करने में असमर्थ परिस्थितियों के सामने झुक सकते हैं। इन तीनों में कोई एक भावोद्वेग हो सकता है। पहले दरबारी कवियों ने सोचकर भरपाई करने को सोचा था। लेकिन तुरंत ही 'ऐसी कल्पना' सर्व साधारण समझकर छोड दिया। उसमें कोई विशेष नहीं है। वैसा हो तो सभी पूर्ति कर सकते हैं। वरदय्या उस स्तर की सुलभ समस्या कभी नहीं देगा। उन्होंने शंका प्रकट की है उसमें सामान्य को छोडकर कोई ऊहातीत विशेषार्थ कुछ होगा। उनकी समझ में कुछ नहीं आया। अनजान में कुछ व्यक्त करके अवमानना का शिकार होने से हार को स्वीकार करने से ही उदात्त समझा जायेगा। इसलिए दरबारी कवियों की ओर से सोमयाजी ने अपनी अशक्तता को व्यक्त करते हुए पद की पूर्ति करने को वरदय्या से विनती की है।

वरदय्या के द्वारा पद पूरन

वरदय्या तुरंत उठकर इस रूप में उसकी पूर्ति की है -

राम! राम! ई मोनितो निक वानि
मोमु चूडवलेना मोदटि पोंदे चालु।

दरबारी कवियों ने अश्चर्य होकर एक दूसरे के चहरे देखने लगे। उस पद का भाव उनकी समझ में नहीं आया लगता है। इसे जान कर वरदय्या ने इस रूप में कहा -

''इस की नायिका का प्रेम भक्ति से जुडा हुआ है न कि भौतिक प्रेम है। उस के द्वारा देखा गया दूसरी स्त्रियों के प्रेम से वह भिन्न है। उन्हीं की तरह मैं भी गोपाल से भौतिक प्रेम चाहने से उसमें कोई औचित्य नहीं होगा। इसलिए पहले वह निराश होने पर भी आखिर अक्ल से पश्चात्ताप से अपने मन को शांत किया। समझ लिया कि घुँघुरुधारी गोपाल के साथ अपना पहला संपर्क ही प्रर्याप्त है।''

वरदय्या के पदों की गति

दरबारी कविगण वरदय्या के सूक्ष्मबुद्धि से मुग्ध हो गये। दिव्य भावना में भी इतने उदात्त भाव से विविध आयामों से स्त्री स्वभाव को व्यक्त करने की प्रतिभा रखनेवाले वरदय्या की असाधारण शक्तियों की प्रशंसा की है। विजय राघव और दरबारी कविगण ने उसके पद वैशिष्ट्य की खूब प्रशंसा की। इससे बढकर वे धीरे धीरे वरदय्या का ही मार्ग अपनाकर अपने ग्रंथों में पद रचना को महत्व दिया। सोमयाजी ने अपने नाटक 'विजय राघव चंद्रिका विहार' में वरदय्या के पदों के अनुकरण में कई पदों को रचा है। उनको पढते समय वे क्षेत्रय्या के पद हैं ऐसा भ्रम हो जायेगा। विजय राघव ने भी ऐसे ही कई पद रचे हैं।

सपने साकार हुए

कुछ दिनों के बाद मोव्वा लौटने का निर्णय करके वरदय्या ने विजय राघव से अनुमति मांगी। विजय राघव अति कठिनाई से वरदय्या की बात मानी है। अंतिम दिन विजय राघव की प्रार्थना पर मोहनांगी ने 'वदरक पोपोवे' नामक पद का अभिनय करके सभी को आनंद सागर में डुबो दिया। अपने पदों के द्वारा घुंघुरुधारी गोपाल की महनीयता का प्रचार करने के अपने सपने साकार होने से वरदय्या को आनंद हुआ। सबका हार्दिक अभिनंदन करते हुए वह मोहनांगी के साथ तंजावूर दरबार छोडकर यात्रा पर निकला।

सही अंतेवासिनी

वरदय्या तंजावूर से गोलकोंडा के लिए निकला। लेकिन तुरंत गोलकोंड न जाकर कंची जाकर एक और बार वरदराज स्वामी के दर्शन करना चाहा। इसलिए कंची गया। वहाँ दोनों ने मन भर स्वामी की सेवा करते बिताया। कंची मंदिर के आचार्यों की प्रार्थना पर वरदय्या ने देवी स्वामी शयन मंदिर से अपने मंदिर जाने के दृश्य का वर्णन करते हुए लिखा 'मगुव तन केलिका मंदिरमु बेडलेन' नामक पद को मोहनांगी वरदराज स्वामी मंदिर के प्रांगण में अद्भुत ढंग से अभिनय किया।

वह पद वरदय्या के पदकविताहार की नायक मणि के समान है। देवी हडबडाहट में केलिका मंदिर से आनेवाली मुद्रा को मोहनांगी ने अद्भुत एवं अलौकिक मनोहर ढंग से प्रदर्शित किया। उत्तेजित होकर वरदय्या के द्वारा रचा गया वह पद मोहनांगी के अभिनय से जीवंत बनकर कलात्मक हो गया। वह एक पल के लिए यह भूल गयी है कि वह अभिनय कर रही है। अपने को देवेरी बना ली। अपने द्वारा सृजित पद को मोहनांगी के दिव्याभिनय के द्वारा जीवंत बनाने से वरदय्या तन्मय हो उठे। अपने पदों में अंतर्निहित दिव्य भाव को हृदयंगम बनाकर अभिनय करने की प्रतिभा सिर्फ उसे ही प्राप्त है, यह शक्ति सिर्फ उसी में है, ऐसा उसने विश्वास किया। वही उसके लिए सही अंतेवासिनी है। सहधर्मचारिणी भी वही बन सकती है। मोहना का मोहनाकार, अलौकिक अभिनय प्रतिभा, वरदय्या की गान-माधुरी दर्शकों के हृदयों को हिलाकर रसानुभूति में डुबो दिया। उन सभी ने किसी गंधर्व लोक विहार करने की अनुभूति को प्राप्त किया।

सभी ने वरदय्या को और मोहनांगी को मुक्त कंठ से धन्यवाद समर्पित किए। वरदय्या उनके आदर से हिल गया। उन पर मुग्ध होकर अनेक रूपों में उनकी प्रशंसा करके गोलकोंडा के लिए रवाना हो गया।

घुँघुरुधारी गोपाल का साइज्य प्राप्त करना है

प्रसिद्ध पदकर्ता के रूप में क्षेत्रय्या उपाधि प्राप्त करनेवाले वरदय्या की कीर्तिचंद्रिकाएँ पहले से ही गोलकोंडा तक फैल गयी थीं। वरदय्या पहले की यात्रा के दैरान गोलकोंडा आने पर कुछ दिन वहीं रहने का वचन दिया था। इसलिए कुतुब्षा नवाब कुतूहल से वरदय्या की राह देख रहे थे। कुतुब्षा कलाप्रिय थे, रसज्ञ भी थे। उनके दरबार में कई वाग्गेयकार थे। फिर उन्हें वरदय्या पर असीम आदर भाव था।

अपने वचनों के अनुसार वरदय्या गोलकोंडा आया। नवाब बहुत आनंदित हुए। उसका अखंड सम्मान किया। अपने दरबार में हमेशा के लिए रहने की विनती की। लेकिन क्षेत्रय्या ने स्वीकार नहीं किया। घुँघुरुधारी गोपाल के कीर्तन करते हुए अभी कुछ और क्षेत्रों की यात्रा करके अंत में मोव्वा लौटकर घुंघुरुधारी गोपाल में साइज्य होना है, अपना अभिमत क्षेत्रय्या ने इस रूप में प्रकट किया। नवाब ठुकरा नहीं सके।

वैसा आत्म प्रत्यय होना चाहिए

नवाब के दरबार में तुलसीमूर्ति नामक एक वाग्गेयकार रहा करता था। वह अच्छे पंडित भी था। लेकिन उसे अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं था। धैर्य से कविता नहीं सुना सकता है। इसलिए नवाब ने एक दिन उसे उकसाने इस रूप में कहा - ''तुलसीमूर्ति! क्षेत्रय्या अप्रयत्न से आशु के

रूप में कितनी तेज गति से पद रचते हैं, पहचानो। मेरी इच्छा है कि तुम भी उसी रूप में पद रचो।'' नवाब की बातें सुनकर मूर्ति ने हडबडाया।

''क्षेत्रय्या दिव्य शक्ति संपन्न हैं। उनमें उत्तेजना पैदा करने के लिए उन के पीछे घुंघुरुधारी गोपाल हैं। उनकी तरह पदरचना करना दूसरों को संभव नहीं है।'' दांत निपोरने लगे। मूर्ति हमेशा अपनी अशक्तता का उल्लेख करके बचकर भागने की कोशिश करता था। इसलिए नवाब ने उसे उकसाने की कोशिश की है। इससे अलग अपनी कविता शैली का समर्थन करते हुए वाद विवाद करने की इच्छा भी उसमें नहीं थी। प्रत्येक बार भागने की कोशिश ही करता है। मूर्ति का यह व्यवहार नवाब को अच्छा नहीं लगता था। उसका चुश्त और क्रियाशील रहना नवाब पसंद करते थे। उन्होंने क्षेत्रय्या की तरफ देखकर कहा - ''क्षेत्रय्या! हमें तुम्हारे शक्ति - सामर्थ्य के बारे में पता है। वाग्गेयकारों में तुम से तुलनीय कोई नहीं है। तुम्हारी परीक्षा लेने का अधिकार या प्रतिभा हममें नहीं है। फिर भी एक विशिष्ट आशय से एक विषम परीक्षा तुम्हारी लेने की इच्छा जाग उठी है। तुम को चालीस दिनों में पंद्रह सौ पद रचने होंगे। वास्तव में तुम्हारी परीक्षा लेकर आवास्तविक ढंग से तुम्हें व्यथा देने का अभिमत मेरा नहीं है। लेकिन मेरा यह प्रयत्न अपने दरबारी कवियों को उत्तेजित करके उनमें नवचेतना भरेगा, ऐसी मेरी अभिलाषा है। इसलिए तुम पर यह महा भार रख रहा हूँ। मुझे क्षमा करो।''

क्षेत्रय्या नहीं हिले। नवाब की चुनौती को सहर्ष स्वीकार करते हुए- ''घुंघुरुधारी गोपाल के अनुग्रह से आप से बतायी गयी समय सीमा के अंदर पंद्रह सौ पद रचूंगा'' कहा।

किसी भी रूप में अपमान करना है

उस रात को मूर्ति को नींद नहीं आयी। दरबार में सब के सामने नवाब के द्वारा अपना अपमान करना उसे बहुत बुरा लगा। वरदय्या के

साथ उसकी स्पर्धा नहीं है। फिर भी उसके कारण अपने को अनावश्यक अपमान सहन करना पड रहा है। नवाब की प्रशंसा में कीर्तन रचकर प्रशांत जीवन काट रहा था। क्षेत्रय्या के आने से उसका अपमान हो गया है। निर्धारित समय में क्षेत्रय्या के द्वारा पद रचना पूरा न हो, ऐसा कोई रुकावट पैदा करके उसका अपमान करने से अपनी प्रतिष्ठा थोडी बहुत बचेगी। नहीं तो नवाब मेरा और अपमान करेगा, ऐसा उसने सोचा।

देखो कि पदरचना पूरा न हो

मूर्ति ने इसके अनुकूल उपाय के लिए सोचना शुरु किया। अंत में उसकी दृष्टि राज नर्तकी कमला पर जा टिकी। उसने सोचा कि वह मेरी मदद करेगी। इसके पहले वरदय्या के गोलकोंडा आने पर वह उसके पीछे पडी थी। उसे ठुकराकर वरदय्या के द्वारा अपमानित होना उसे याद आया। तुरंत उसने कमला के घर जाकर उसके साथ चर्चा करना शुरु किया। किसी भी रूप में उसे अपने जाल में फंसाकर नवाब के द्वारा दी गयी समय सीमा के अंदर पदरचना को पूरा न होने देने की प्रार्थना की।

मुझे धन्य बनाओ

वरदय्या के प्रति कमला का मोह अभी कम नहीं हुआ। वह मौके का इंतजार कर ही है कि कैसे वरदय्या को अपने बाहुपाश में कैद करना है। उसने सोचा कि अब मूर्ति की सलाह से अपनी इच्छा की पूर्ति की जा सकता है, या उससे अपना बदला ले सकती है। क्षेत्रय्या में संदेह पैदा किए बिना उसे अपने रास्ते में लाने के उपाय के बारे में वह सोचने लगी।

एक दिन वरदय्या एकांत में नवाब किसी बात की चर्चा करके अकेले अपने निवास स्थल के लिए निकला। कमला ने सामने जाकर नमस्कार करके ''स्वामी! आप की प्रतिभा के बारे में सुना है। अज्ञानवश

इसके पहले आप पर भौतिक कांक्षा रखकर आप के हृदय को टेस पहुँचायी। मुझे क्षमा कीजिए। आप आज मेरे घर में सिर्फ एक पल रहकर मुझे धन्य बनाइए'' प्रार्थना की।

सब प्रेममय है

पहली बार गोलकोंडा आने पर वरदय्या की जो मनःस्थिति थी आज वह नहीं है। अत्यंत विकसित उसके मन में आज कोई शंका नहीं है। उसे पूरा जगत प्रेममय नजर आ रहा है। इतने दिन उन्होंने अनेक क्षेत्र और दरबारों के चक्कर काटकर घुँघुरुधारी गोपाल की महनीयता का कीर्तन करने से अपने निर्मल प्रेम तत्व की जीत हुई है, ऐसा उसका विश्वास था। अब उसका प्रयत्न है कि उस प्रेम तत्व को समस्त प्राणियों में बांट दे। उस समय वह उसे एक अप्सरसा की तरह नजर आयी। फिर भी अपने मन पर काबू रखकर वहाँ से निकल जाना चाहा। लेकिन तुरंत उठकर जा नहीं पाया। थोडी देर के लिए आलस दिखाया।

उस में आनेवाले परिवर्तन को कमला ने पहचान लिया। तुरंत उस के वश नहीं जाने का निर्णय किया। उसे दी गयी प्रेम - दवा के असर से वह हमेशा के लिए उसके वश में रहेगा, ऐसा उसने सोचा। उसे तडपाने के लिए कुछ दिनों तक उससे दूर रहने का निर्णय किया। अपनी खोज करते हुए वह स्वयं आयेगा, ऐसा उसने सोचा। इसलिए स्वयं उस के पास जाकर उसे कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए उसे बाहर भेज दिया।

अपकार हो या प्रशंसा दोनों नहीं

वरदय्या किसी रूप में अपना निवास स्थल पहुँच गया। उसकी हालत को देखकर मोहनांगी को आश्चर्य हुआ। उसने समझ लिया कि उसका मन ठीक नहीं है। उसने सोचा कि शायद वरदय्या को निर्धारित

समय में पद रचना पूरा नहीं करने की चिंता हो। उसे सांत्वना देती हुई कहा ''वरदा! शायद तुम ठीक नहीं है। तुम्हारा मन ठीक नहीं है। नवाब के द्वारा दी गयी कालावधि बहुत कुछ समाप्त हो गयी। अब कुछ दिन बच गए हैं। अब तक तुम ने पदरचना करना शुरु ही नहीं किया। शायद तुम को यह चिंता सता रही है कि वचनों का पालन कैसे किया जाया। कोई परवाह नहीं है। चलो हम दोनों मोव्वा के लिए चले। दरबारी कवि बनने की लालसा तुझे नहीं है न? इसलिए पदरचना पूरा करने से मिलनेवाली प्रशंसा, पूरा नहीं करने पर होनेवाला खतरा भी कुछ नहीं है।''

वरदय्या ने उसे स्वीकारा नहीं है। वचन देकर पदरचना को पूरा करने के दायित्व को पूरा किए बिना वापस लौट जाना उचित नहीं है। मोहनांगी ने कुछ नहीं कहा। इसी बीच वह उठकर अचानक कहीं जाने के लिए निकल पडा।

कमला चकित रह गयी

मोहनांगी कांप गयी। गुप्त रूप से उसकी आंखों से बचती हुई मोहनांगी ने उस का पीछा किया। उसकी स्थिति को देखकर मोहनांगी को संदेह हुआ। उसे शक हुआ कि वह किसी दरबारी स्त्री के चुंगुल में फँस गया है। थोडी दूरी से उस का पीछा करने लगी। कमला के घर में उसे प्रवेश करते हुए देखा। उसका संदेह सही निकला। लेकिन स्वयं कमला के मकान के अंदर जाने में सकुचाया। वह लौट कर आयेगा, समझकर काफी देर इंतजार किया। लेकिन उस के लौटने का कोई आसार दिखाई नहीं दिया। उसने अपना हृदय थाम कर कमला के घर में प्रवेश किया।

कमला नाच रही थी। वरदय्या मंत्रमुग्ध होकर नाच को देख रहा था। मोहनांगी को चक्कर आ गया। गुस्से से उसकी आँखें लाल लाल हो गयीं।

भौहें काटकर कमला की तरफ तीक्ष्ण देखकर मोहनांगी वरदय्या का हाथ पकडकर वहाँ से ले गयी। अचानक घटित इस घटना से कमला चकित रह गयी। फिर भी उसे लगा कि वह लौटे बिना रह नहीं सकता है।

वह अवश्य ही षड्यंत्र ही है

घर पहुँचते ही मोहनांगी रोने लगी। क्या हुआ बताने के लिए वरदय्या से प्रार्थना की। कमला की प्रार्थना ठुकराये बिना स्वयं कमला के मकान पर जाना, उस के द्वारा शरबत देना, उपरांत उसे देखे बिना रह पाने की असहाय स्थिति में उसके लिए जाना, पूरे विवरण के साथ वरदय्या ने बताया।

मोहनांगी को शक हुआ कि कमला ने शरबत के साथ किसी वशीकरणौषधि को वरदय्या को पिलाया है। तुरंत वैद्य को बुलाकर उस शरबत से बचने की दवा दिलायी। उससे वरदय्या फिर से ठीक हो गया। खोज करने पर पता चला कि यह सब कुछ मूर्ति और कमला का षड्यंत्र है। वरदय्या का अपमान करने के लिए उन्होंने इस रूप में षड्यंत्र रचा है।

मूर्ति और कमला को भी इस बात का पता चला। वरदय्या शायद नवाब को बतायोगा, अपने को कौन सा दंड दिया जायेगा, यह सोचते हुए दोनों डरने लगे। लेकिन वरदय्या सहृदयी है। उस मामले को किसी से नहीं बताया। वैसे ही रोजाना दरबार जा रहे हैं। पदरचना को लेकर नवाब वरदय्या को सावधान करते थे। लेकिन वरदय्या की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं है।

कावावधि का सिर्फ एक दिन बच गया।

पदरचना पूरी हो गयी

क्षेत्रय्या ने अभी पदरचना का संकल्प नहीं किया। मोहनांगी तडप उठी। निर्मल भक्ति से घुँघुरुधारी गोपाल की पूजा करने लगी। उस दिन क्षेत्रय्या भी निश्चल ध्यान में रहा। अचानक उसके अंदर से एक दिव्य किरण फूट निकली। उसे लगा कि घुँघुरुधारी गोपाल ने उसके अंदर प्रवेश किया है। उसे संतोष और आवेश हुआ। एक नयी शक्ति उसके अंदर पैदा हो गयी। लिखना शुरु किया। सुबह होते होते पंद्रह सौ पद पूरे हो गए।

प्रातः काल की ठंडी हवाएँ बह रही थी। क्षेत्रय्या को पुलकावली हुई। उसने आँखे खोल कर देखा। उसकी आँखों के सामने पद दिखाई दिए। उसे पता नहीं चला कि उन्हें स्वयं ने लिखा है या घुँघुरुधारी गोपाल ने लिखा है। मोहना उसके बगल में ही सुशुप्ति में पडी हुई थी। उसने उस का मृदु स्पर्श किया। उस ने नींद से जाग कर पद संकलन की तरफ देखा। आश्चर्य से परवश हो गयी। घुँघुरुधारी गोपाल के द्वारा अनुग्रह प्राप्त करने से मोहना की आँखों से आनंद भाष्प गिरने लगे।

यह समाचार पाकर सभी को आश्चर्य हुआ। उनमें एक अपूर्व रोचकता का जन्म हुआ। नवाब के आनंद की सीमाएँ नहीं रही। क्षेत्रय्या की प्रतिज्ञा को भंग करने के लिए कमला के साथ मिलकर जो षड्यंत्र मूर्ति ने किया, इससे उसे बहुत लज्ञा हुई। क्षेत्रय्या की तथा उसकी पदरचना की अनेक रूपों में उन्होंने प्रशंसा की है।

नवाब की अनुमति लेकर क्षेत्रय्या गोलकोंडा से निकला। कुछ और क्षेत्रों के दर्शन वह करना चाहता था। किसी भी दरबार में जाना नहीं चाहा। मोहनांगी के छोटे भाई को पहले से ही मोव्वा भेज दिया।

भद्राद्रि में क्षेत्रय्या

मोहना और क्षेत्रय्या सीधे गोलकोंडा से भद्राचलम गए। गोदावरी नदी के तट पर मंदिर का निर्माण करने के प्रयत्न चल रहे थे। मंदिर बहुत भव्य बन रहा था। मंदिर का स्थल भी बहुत मनोहर लग रहा था। निर्मित होनेवाले मंदिर के बगल से गोदावरी कल कल करती हुई बह रही थी। मंदिर निर्माण वाले पहाडी से देखने पर नदी का यह दृश्य अतिमनोहर लग रहा था। पूरा प्रदेश जंगल से भरा हुआ था। क्षेत्रय्या ने भद्रगिरि राम के दर्शन करके उनकी पूजा की। श्रीरामचंद्र के आदर्श जीवन ने उसके हृदय पर अमिट छाप छोडी है।

मल्लिकार्जुन के दर्शन

भद्रगिरी से दोनों श्रीगिरी गए। जंगल के रास्ते से यात्रा करते हुए उन्हें बहुत तकलीफ हुई। उस क्षेत्र तक पहुँचने में उन्हें कई दिन लग गए। मंदिर बहुत बडा है। एक महा दुर्ग की तरह वह था। मंदिर के बगल से ही कृष्णा नदी बह रही थी।

वहाँ का शिवलिंग कहीं पाताल से उद्भूत हुई है, शैव क्षेत्रों में श्री शैल मल्लिकार्जुन का मंदिर महोत्कृष्ट है, ऐसी मान्यताएँ हैं। वहाँ की प्रशांतता, मंदिर का उन्नत प्रदेश, वहाँ के परिवेश के वैभव को देखकर क्षेत्रय्या मुग्ध हो गए। उसने मल्लिकार्जुन स्वामी पर कुछ पद रचे।

तिरुमल क्षेत्र में क्षेत्रय्या

इसके उपरांत वे तिरुमल गए। श्रीवेंकटेश्वरस्वामी कहीं सात पहाडों के पार बसे हैं। सप्तगिरियों पर चढना अतिश्रमसाध्य था। वह प्रदेश दिव्य लोक की याद दिला रहा था। वहाँ का प्रकृति - सौंदर्य नेत्र पर्व कर रहा

था। एक एक पहाड चढते रोमांचित होती थी। भक्तों के लिए वह एक परीक्षा ही थी। लेकिन पर्वत पर चढकर वहाँ के प्रशांत वातावरण को, स्वामी की मूर्ति के दर्शन करने से वहाँ तक पहुँचने के लिए जो श्रम किया उसे भूल जाते हैं। उस पुण्य क्षेत्र के दर्शन करने की इच्छा क्षेत्रय्या को कई दिनों से थी। आखिर उसका सपना साकार हो गया। स्वामी की दिव्यमूर्ति के दर्शन से वह पुलकित हो गया। उस मूर्ति को देखते देखते वहीं रहकर उसके दिव्य वैभव को और देखने का कुतूहल क्षेत्रय्या को हुआ।

उस मूर्ति में कोई अद्भुत आकर्षण है। दर्शन मात्र से ही भक्तों में आनंद और धार्मिक चिंतन को बढानेवाली शक्ति उस मूर्ति में है। श्री वेंकटेश्वर की मूर्ति जैसी चित्तोद्रेक को बढानेवाली और किसी मूर्ति को क्षेत्रय्या ने और कहीं नहीं देखी थी। स्वामी की मूर्ति बहुत ही उदात्त और सुंदर है। वहाँ का प्रत्येक कण क्षेत्रय्या को अतिपवित्र लगा।

मंदिर के मुख द्वार पर ही श्रीकृष्णदेवराय की तांबे की मूर्ति है। उस के दोनों तरफ उनकी देवेरियों की मूर्तियाँ हैं। श्रीकृष्णदेवराय ने इस मंदिर के लिए कई भेंट और जमीन दान के रूप में दिया है। श्रीकृष्ण देवराय को श्रीवेंकटेश्वर भगवान पर अपार भक्ति और विश्वास था। उनका कुल देव भी वे ही थे। कहा जाता है कि श्री वेंकटेश्वर भगवान ने अपने विवाह के लिए धनाधिपति कुबेर से उधार लिया था। उस उधार को चुकाने की कालवधि कलियुगांत है। तब तक भक्त अपनी शक्ति के अनुसार स्वामी को भेंट समर्पित करते रहेंगे।

वेंकटेश्वर स्वामी को लेकर कई पौराणिक गाथाएँ प्रचलित हैं। बडे चाव से क्षेत्रय्या सारी गाथाएँ सुन कर आश्चर्यचकित हुआ। मोहना और

क्षेत्रय्या दोनों श्रीवेंकटेश्वर की आराधना करते हुए वहाँ एक महीने के लिए रहे। रस से भरे अपने कीर्तनों से श्रीवेंकटेश्वर की स्तुति करनेवाले अन्नमाचार्य का क्षेत्रय्या ने भक्ति भाव से स्मरण किया। स्वयं अपने पदों से जिस रूप में घुँघुरुधारी गोपाल की सेवा की है उसी रूप में अन्नमाचार्य ने मधुरातिमधुर अपने कीर्तनों से श्रीवेंकटेश्वर की सेवा की है।

सर्वस्व गोपालमय है

क्षेत्रय्या ने दक्षिण के कई क्षेत्रों के दर्शन किए। कुल उन्होंने बीस क्षेत्रों तक के दर्शन किए। गोलकोंडा, मधुरै और तंजावूर दरबारों में कई वर्ष रहे। कहीं भी जाय मुक्त कंठ से गोपाल के पदों का गान किया। उस की दृष्टि में सर्वस्व गोपालमय है। किसी भी मंदिर में क्यों नहीं गया हो वहाँ की मूर्ति में उसने घुंघुरुधारी गोपाल के दिव्य रूप के ही दर्शन किए। इसलिए कहीं भी किसी के साथ भी कोई वाद विवाद उसे नहीं हुआ। सभी धर्मों के लोगों से भी उसे आदर मिला।

क्षेत्रय्या के मोव्वा छोडकर लगभग एक दशक हो गया। अब उसे घुँघुरुधारी गोपाल का विरह असह्य हो गया। उसे लगा कि वे स्वयं उसे वापस बुला रहे हैं। मोहना ने वरदय्या में परिणति को पहचाना। उसकी उम्र ज्यादा तो नहीं है। फिर भी वह अपने लिए परिपक्व नजर आ रहा है। अब देर न करके मोव्वा लौट जाने का निर्णय कर लिया।

वह एक दिव्य प्रेम

मोहना और वरदय्या तिरुमल से सीधे मोव्वा लौट आये। उस दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी था। इसके पहले ही मोहना के छोटे भाई ने मोव्वा लौटकर कवि, गायक और पदकर्ता के रूप में दक्षिण देशों में प्राप्त

कीर्ति-प्रतिष्ठा के बारे में सब को बताया था। क्षेत्रय्या या क्षेत्रज्ञ के रूप में उपाधियाँ पानेवाले अपने वरदय्या को देखने के लिए गाँव गाँव राह देख रहा था। मोहना और वरदय्या सीधे गोपालजी के मंदिर ही गए। घुँघुरुधारी गोपाल के दर्शन करके उन्हें दस वर्ष हुए थे। आनंद भाष्प गिराते दोनों ने हाथ जोडकर घुँघुरुधारी गोपाल की जी भर स्तुति की।

उन्हें देखने आस पडोस के गाँव से बडी संख्या में लोग आये थे। क्षेत्रय्या दूसरी तरफ ध्यान न देकर एकाग्र चित्त होकर घुँघुरुधारी गोपाल के पद गा रहे थे। मोहना अभिनय कर रही थी। उस समय वह एक उज्ञवल तारे के रूप में चमक रही थी। वरदय्या के चहरे में एक दिव्य कांति झलक रही थी। उसके द्वारा गाये जानेवाले सभी पद गोपालनामांकित ही थे। ऊपर से वे श्रृंगार पद लगने पर भी उनके अंदर अतंर्वाहिनी के रूप में व्यक्त अलौकिक प्रेम मोहना के दिव्याभिनय से व्यक्त होने से दर्शक रसावेश में डूब जाते थे। उस समय उन्हें मोहना और वरदय्या दिव्य प्रेम में डूबे राधा कृष्ण की तरह दिखाई पडने लगे हैं।

गोपाल पद साइज्य

अचानक वरदय्या के चेहरे के चारों तरफ एक कांति परिवेष्ठित हो गयी। उसे कोई दिव्यावेश का अनुभव होने लगा। वह अभी आवेश में गोपाल पद संकीर्तन कर रहा था। एक पल में उसके शरीर से एक दिव्य कांति बाहर निकल कर घुँघुरुधारी गोपाल में लीन हो गयी। गोपाल देव ने उसे अपने में मिला लिया।

मोहना अब भी तन्मयत्व में नाट्य कर रही थी। अपने वरदय्या को ब्रह्मत्व प्राप्त हुआ है, उसका वरदय्या घुँघुरुधारी गोपाल में साइज्य हो

गया, तुरंत ही उसने समझ लिया। उसके नेत्रों से आँसू टपकने लगे। उस दिव्यानुभूति से उसका शरीर रोमांचित हो गया। निमिलित नेत्रों से वह धीरे धीरे वरदय्या के शरीर पर गिर गयी। रस सिद्धि प्राप्त मोहना और वरदय्या का रागानुबंध अटूटनीय है।

* * *